AIRO JOURNALS

Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume:4 Issue:3
December 2023
Impact Factor: 11.9
Subject: Humanities

मृणाल पांडे के कथा साहित्य में संवेदना एवं शिल्प

सीता राय, डॉ. राजेश कुमार शर्मा, डॉ. शिवानी शर्मा
हिंदी विभाग, भगवन्त विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान, भारत

DECLARATION: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER /ARTICLE, HERE BY DECLARE THAT THE PAPERSUBMITTED BY MEFOR PUBLICATION IN THE JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN GENUINEPAPER.IFANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/ OTHER REAL AUTHOR ARISES, THE PUBLISHERWILL NOT BELEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MYCONTENT FROM THE JOURNALWEBSITE. FOR THE REASON OF CONTENT AMENDMENT/OR ANYTECHNICAL ISSUE WITH NO VISIBILITY ON WEBSITE/UPDATES, I HAVE RESUBMITTED THIS PAPER FORTHE PUBLICATION.FOR ANY PUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLY HIDDENBY ME OR OTHERWISE, ISHALL BELEGALLY RESPONSIBLE. (COMPLETE DECLARATION OF THE AUTHORATTHE LAST PAGE OF THIS PAPER/ARTICLE

सारांश

मृणाल पांडे जी का स्थान समकालीन साहित्य जगत में विशिष्ट स्थान रखता है। उनका साहित्य रचना संसार बहुत ही अथाह है। उन्होंने नाटक, कहानी ,उपन्यास, निबंध, पत्रकारिता ,आलोचना ,खास तौर पर स्त्री विमर्श ,यथार्थ बोध एवं नारी की अस्मिता को जगाने का प्रयास किया है।उनके साहित्य में सामाजिक यथार्थ का चित्रण मिलता है। मृणाल पांडे ने अपने साहित्य जगत में स्त्री–पुरुष के संबंधों को एक नया रूप देने की कोशिश की है उन्होंने आधुनिक जगत में अपनी अस्मिता को तलाशती नारी का चित्रण किया है। मृणाल पांडे के साहित्य संसार में आधुनिक नारी की स्थिति ,यंत्रणा ,संघर्ष जिजीविषा आदि विषयों का खुला चित्रण किया गया है।

मृणाल पांडे ने अपने साहित्य में न केवल परिवेश की समस्याओं का चित्रण किया है बल्कि पाठकों को साहित्य के माध्यम से समाज में व्याप्त समस्याओं के प्रति सजग रहने का भी आह्वान किया है। वर्तमान समाज का भी जीता जागता चित्र उन्होंने बखूबी पेश किया है।

एक कथा साहित्यकार के रूप में इनका स्थान अतुल्य हैं। मृणाल पांडे जी का साहित्य अत्यंत महत्वपूर्णव विशिष्ट हैं।

मुख्यशब्द: स्त्री विमर्श, यथार्थ बोध स्थिति, यंत्रणा, संघर्ष, जिजीविषा आदि

परिचय

मृणाल पांडे (26 फरवरी 1946–) एक भारतीय पत्रकार, लेखक और भारतीय टेलीविजन की जानी–मानी हस्ती हैं। अगस्त 2009 तक, वह हिंदी दैनिक ''हिंदुस्तान'' की संपादक थीं। वह हिंदुस्तान टाइम्स के हिंदी प्रकाशन समूह की सदस्य भी हैं। इसके अलावा वह लोकसभा चौनल के साप्ताहिक साक्षात्कार कार्यक्रम (बातों बातों में) का भी संचालन करती हैं। मृणाल

ISSN: 2320-3714
Volume:4 Issue:3
December 2023
Impact Factor: 11.9
Subject: Humanities

पांडे का जन्म मध्य प्रदेश के टीकमगढ़ में प्रसिद्ध उपन्यासकार और लेखिका शिवानी जी के घर हुआ था। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा नैनीताल में पूरी की। उसके बाद उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम. ए. किया। किया। उन्होंने करकरन (वाशिंगटन डी.सी.) से अंग्रेजी और संस्कृत साहित्य, प्राचीन भारतीय इतिहास, पुरातत्व, शास्त्रीय संगीत और ललित कलाओं में अपनी शिक्षा पूरी की।
21 साल की उम्र में उनकी पहली कहानी हिन्दी साप्ताहिक 'धर्मयुग' में छपी। तब से वे लगातार लिख रही हैं। समाज सेवा में उनकी गहरी रुचि है। वे कुछ वर्षों तक 'स्वरोजगार महिला आयोग' की सदस्य रही हैं। अप्रैल 2008 में, उन्हें पीटीआई का बोर्ड सदस्य बनाया गया। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैंय कहानियांः यानी एक बात थी, बचुली चौकीदारीन की कढ़ी, नारी का विदाई गीत, चार दिन की तेरी जवानीय उपन्यासः विरुद्ध, अपनी गवाही, हुमका दियो परदेस, भटकते रास्तों पर, पटरंगपुर पुराण, देवी, सहेला रेय आलोचनाः ओ उब्बीरी, बंद सड़कों के खिलाफ, महिलाः लंबी यात्रा, महिलाः शरीर की राजनीति से देश की राजनीति तक, आवाजों की रोशनी में महिलाय लेखः जहां महिलाओं का निर्माण होता है।

कथा साहित्य में संवेदना एवं शिल्प

मनुष्य समाज में विभिन्न व्यक्तियों, वस्तुओं से जुड़ कर किसी न किसी प्रकार की भावानुभूति करता है। इस प्रकार अनुभूति से जो भाव प्रवाह होता है, वह मनुष्य को जीवन में आगे बढ़ने के लिए शक्ति और ऊर्जा देता है। ऐसी भाव–प्रेरणा का जीवन में विशेष महत्त्व होता है। इसे ही संवेदना की संज्ञा दी जाती है। संवेदना मनुष्य की जीवंतता, सजगता और चौतन्यता का आधार और प्रमाण भी है। मनव जीवन में संवेदना का यथार्थ रुप सामने होता है। हमारे संवेदना ऐसे में प्रभावी अवश्य होती है, किन्तु तात्कालिक या भाव संदर्भित होती है। साहित्य में संवेदना की तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक तो होती है इसके साथ भूतकालीन संदर्भो के आधार पर मध्यकाल और आदिकाल तक की संवेदना उभर आती है। इतना ही नहीं ऐतिहासिक संदर्भ से पुराने समय की घटना या गतिविधियों पर संवेदना का उभरना स्वाभाविक है।

संस्कृत के साहित्यिक ग्रन्थों में ''शिल्प शब्द का प्रयोग अनेक रूपों में मिलता है। यथा 'ऐतरेय ब्राह्मण' में विधाता की रचना को देव – शिल्प और मनुष्य की सृष्टि के लिए एतेषाम् वैशिल्पनाम् कहा गया है। 'मनुस्मृति' में शिल्प का अर्थ कला कौशल के रूप में हुआ है। भरतमुनी के 'नाट्यशास्त्र' में कलाओं तथा शिल्प को काव्य का अंगांगी मात्र कहा गया है।''
'मैत्रायाणी उपनिषद' में शिल्प का अर्थ –''कला, 'अथर्ववेद' के परिशिष्ट में –
कारागीर, 'श्रोतसूत्रों, धर्मसूत्रों तथा पाणिनी की अष्टाध्यायी ' इन तीनों में गीत, नृत्य तथा वादन को शिल्प कहा गया है। 'रामायण' में शिल्पकार अर्थात् कलाकार और शिल्पी अर्थात्

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid Peer Reviewed Multidisciplinary International
ISSN: 2320-3714
Volume:4 Issue:3
December 2023
Impact Factor: 11.9
Subject: Humanities

चर्मकार जैसा कारागीर तथा स्थापत्य के अर्थ में भी शिल्प का प्रयोग है। 'कौटिल्य अर्थशास्त्र' में शिल्प शब्द का संगीत, नृत्य आदि ललित कलाओं के अर्थ में प्रयोग हुआ है। कृ गणिका रूपयौवन शिल्प युक्त '। चाहिए यह कहा है। शिल्प को कला के अर्थ में भी लिया है। 'वराहमिहिर' ने कलाकुसर का कार्य इस अर्थ में शिल्प शब्द का बृहज्जातक में प्रयोग किया है।''

वर्तमान युग के आधुनिक परिवेश का तात्विक विश्लेषण भी उन्होंने अपने साहित्य में प्रचुर मात्रा में किया है। इस आधुनिकता के दौर में संबंधों में अजनबीपन की झलक आँखों में उतर आती है। विरुद्ध 'उपन्यास की नायिका रजनी खुद फैसले लेने में विश्वास रखती लेकिन कहीं – कहीं उसमें हीन भावना भी आ जाती है। इसलिए उदय उसे कहता –''तुम तो जरूरत से ज्यादा नरमाई और विनय दिखाती हो न कभी – कभी हँसने के काबिल लगता है। गाड़ी मंगवानी है तो मांग लो ,खाली नहीं होगी तो बता दूँगी। इतना डर लेकर तोतुम कभी कुछ नहीं कर सकोगी ,समझी ?उमेश जी कहानी मेंमाँ और बड़ी बहन के द्वारा नौकरी करने की मजबूरी के कारण छोटी बेटी एक पुरुष की वासना का शिकार हो जाती है।'' खूब रात गए ,मैं घर पहुँची। माँ सो रही थी। बड़ी बहन ने चुप चिटकनी खोली और फिर जाकर सो गई उसने पूछा भी नहीं कैसे लौटी। "वस्तुतः मृणाल पांडे जी को आधुनिक परिवेश के रिश्तों का यह रूप उन्हें परिवर्तित मूल्यों के प्रति गहरी चिंता प्रकट करने को मजबूर करता रहा है।

मृणाल जी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से सत्याभिव्यक्ति की है। उनकी कहानियों में पिता और कभी – कभी माता के साथ संतान ,पुत्र ,पुत्रवधू के द्वारा किया गया। ऐसा व्यवहार है। जो पुरानी पीढ़ी को बुरी तरह तोड़ता है। कैंसर ' कहानी में माता – पिता के प्रति बच्चों का घटता स्नेह पूरी मार्मिकता से वर्णित हुआ है।

'दुर्घटना' कहानी में शहरी और ग्रामीण सभ्यता के बीच की टकराहट दिखाई देती है। इसी प्रकार लोककथा शिल्प में ढली बढ़ी सशक्त कहानी ' एक थी हँस –मुख दे 'में परियों – चिड़ियों की बातों के माध्यम से इस बात की सत्याभिव्यक्ति प्रस्तुत हुई है कि पुरुष प्रधान समाज में सारी व्यवस्था ,सारी रीति –नीतियाँ नारी के लिए ही की थी। पुरुष पर कोई बंधन नहीं था। सब बंधन स्त्री के लिए ही हैं।

पति –पत्नी में अलगावका कारण सांस्कृतिकमूल्यों के पतन की सत्याभिव्यक्ति इनकी रचनाओं में मिलती है। ' शरण्य की ओर 'कहानी में पालित उमी पति – पत्नी होते हुए भी एक दूसरे से बहुत दूर हैं। उमी के एक राजदूत के साथ संबंधों को लेकर हुए झगड़े ने दोनों में दूरियाँ ला दी। दुनिया को दिखाने के लिए समझौता भी हो गया तो क्या ?अंधा

AIRO JOURNALS

Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume:4 Issue:3
December 2023
Impact Factor: 11.9
Subject: Humanities

भी देख सकता है कि दोनों इससे कितने असंतुष्ट हैं कैसे एक –दूसरे को बुली करते रहते हैं। "

डॉ.मोहन अवस्थी काव्यशिल्प की सैद्धान्तिक व्याख्या करते हुए लिखते हैं कि–''काव्य–विधान काव्य का वित्रान है। कविता करने की विधि से लेकर कविता सम्बन्धी गुण–दोषों का विधिवत् ज्ञान उसके भीतर आ जाता हैं और उस ज्ञान का आत्म दृ प्रकाश काव्य – शिल्प है।'' "काव्य कृति के निर्माण में जिन उपादानों द्धारा काव्य का ढाँचा तैयार किया जाता हैं, वे सब काव्य के शिल्प तत्व कहे जाता है। शिल्प – विधि रचना की उन प्रमुखताओं का लेखा–जोखा हैं, जिनके आधार पर रचना मूर्त हो चुकी हैं अथवा विशिष्ट भंगिमा के साथ लेखनी द्धारा अवतरित होते हैं''।
स्पष्ट हैं कि काव्य – शिल्प कविता की रचनात्मक प्रक्रिया या सृजन विधि है। काव्य शिल्प के समानार्थक शब्द हैं – रचना विधान, शिल्प विधान, रूप रचना, रचना – कौशल, काव्य सौन्दर्य, अभिव्यक्ति – विधान, अभिव्यंजना सौन्दर्य आदि। अन्ततः "हर रचना के साथ वस्तु और शिल्प अविभाज्य रूप से सम्पृक्त होते है। दोनों की समग्रता ही रचना की सृष्टि करती हैं
कविता की धाराओं सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन तथा शिल्प की रूढ़िग्रस्तता की प्रतिक्रिया स्वरूप बदलती है। स्वातंत्रोत्तर हिंदी कविता में जैसे विषय बदले, वस्तु बदली और कवि की जीवन –दृष्टि बदली वैसे ही शिल्प के क्षेत्र में रूप विधान के नये आयाम भी विकसित हुए। कविता की समीक्षा के मानदण्डों में एक बारगी युगान्तर आया और नये ढंग पर कविता की इमारत खड़ी की गई। कवि की अनुभूतियाँ नये अप्रस्तुतों और प्रतीकों को खोजते – खोजते कविता के शिल्प क्षेत्र को समृद्ध किया।

संदर्भ

1. एक स्त्री की विदागीत ,पृ .14
2. गोपाल शर्मा ,संस्कृत , लोककथा में जीवन ,पृ . 68
3. मृणाल पांडे ,परिधि पर स्त्री ,पृ . 9
4. मृणाल पांडे ,जो राम रचि राधा , पृ . 22
5. वही ,पृ . 28
6. मृणाल पांडे ,परिधि पर स्त्रीत्रिभुज के बारे में सोचते हुए ,पृ . 35
7. मृणाल पांडे ,विरुद्ध ,पृ . 34
8. मृणाल पांडे ,यानि कि एक बात थी ,पृ .96
9. वही , दरम्यान, पृ .48
10. मृणाल पांडे ,दरम्यान ,पृ .62
11. सं .रणवीर रांग्रा ,साधना और संघर्ष ,पृ . 62

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:4 Issue:3
December 2023
Impact Factor: 11.9
Subject: Humanities

12. कंजमिया ,हिस्ट्री ऑफ इंग्लिश लिट्रेचर ,पृ 15 (उद्धृत त्रिभुवन सिंह, हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद ,हिन्दी प्रचारक संस्थान ,वाराणसी , 1957
13. मृणाल पांडे , दरम्यान, पृ .22
14. वही पटरंग पुराण , पृ . 121, 122

Author's Declaration

I as an author of the above research paper/article, hereby, declare that the content of this paper is prepared by me and if any person having copyright issue or patentor anything otherwise related to the content, I shall always be legally responsible for any issue. For the reason of invisibility of my research paper on the website/amendments/updates, I have resubmitted my paper for publication on the same date. If any data or information given by me is not correct, I shall always be legally responsible. With my whole responsibility legally and formally I have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide (if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism and hentriacontane is genuinely mine. If any issue arises related to Plagiarism/Guide Name /Educational Qualification/Designation /Address of my university /college /institution/Structure or Formatting/ Resubmission / Submission /Copyright /Patent/Submission for any higher degree or Job/Primary Data/Secondary Data Issues. I will be solely/entirely responsible for any legal issues. I have been informed that the most of the data from the website is invisible or shuffled or vanished from the data base due to some technical fault or hacking and therefore the process of resubmission is there for the scholars/students who finds trouble in getting their paper on the website. At the time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide or do not submit the copy of my original documents (Aadhar/Driving License/Any Identity Proof and Photo) in spite of demand from the publisher then my paper may be rejected or removed from the website anytime and may not be consider for verification. I accept the fact that as the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declare that if publisher finds any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper may be removed from the website or the watermark of remark/actuality maybe mentioned on my paper. Even if anything is found illegal publisher may also take legal action against me

सीता राय,
डॉ. राजेश कुमार शर्मा,
डॉ. शिवानी शर्मा

******